IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 1, August 2026
Impact Factor: 8.2

अहिल्या बाई होलकर एक महान शासिका के रूप में

कंचन सिंह नगेल
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
शा. माधव महाविद्यालय चंन्देरी, अशोकनगर, म.प्र
prajapatikanchan48@gmail.com

सारांश: **अहिल्याबाई होलकर भारत की एक महान शासिका के रूप में ख्याति प्राप्त हैं उनके जनहितैषी वधर्म प्रिय कार्यों की एक लंबी श्रृंखला रही है उन्होंने अपने राज्य में विकास के वह मानक तैयार किय थे जो आज भी लोगों के प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं उनकी जनकल्याण के प्रति अटूट श्रद्धा के कारण उन्हें भारत में लोक देवी व लोक माता के नाम से जाना जाता है अहिल्याबाई होलकर ने अपने राज्य की सीमाओं के बाहर संपूर्ण भारत के प्रसिद्ध तीर्थ और धर्म स्थानों पर मंदिर निर्माण करवाया घाट बनवाए कुओं और बावड़ियों का निर्माण करवाया आम जन हेतु सुगम रास्ते बनवाए और जगह-जगह प्याऊ लगवाई वहीं मंदिरों में विद्वानों की नियुक्ति शास्त्रों के चिंतन मनन और प्रवचन हेतु भी की थी और आत्म प्रतिष्ठा के झूठे मोह का त्याग करके सदा न्याय करने का प्रयत्न करती रही ऐसे बहुत कम शासक हुए हैं जिनको उनके जीवित रहते ही जनता ने देवी व लोक माता का स्थान दिया हो इतना महान व्यक्तित्व आम जन ने पहले कभी नहीं देखा और ऐसे समय शासन और व्यवस्था के नाम पर घोर अत्याचार हो रहा हो प्रजा किसान मजदूर अत्यंत परेशान में हो उस समय न्याय में न सकती रही थी और ना विश्वास ऐसे समय में की उन विकट परिस्थितियों में अहिल्याबाई होलकर ने जो कार्य किया वह स्मरणीय बन गए आज भारत के अलग-अलग राज्यों में मानवता की भलाई के लिए किए गए उनके कार्य प्रेरणा स्रोत का काम कर रहे हैं उनकी जगह-जगह प्रतिमाएं बनाई जा रही हैं और उनके नाम पर अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं।**

मुख्य संकेतक: **अहिल्या बाई होलकर एक महान शासिका के रूप में**

परिचय

महारानी अहिल्याबाई होलकर का व्यक्तित्व उन्हें विश्व की विशेषतम महिलाओं की पंक्ति में अग्रणी बनाता है भारत के इतिहास और जनमानस पर उनका विशेष प्रभाव रहा है भारत की महिलाओं ने इतिहास में वह स्थान अर्जित किया जिससे देवता भी वंचित रहे महारानी अहिल्याबाई होल्कर का भारत के इतिहास व जनमानस पर विशेष प्रभाव रहा है विश्व का सबसे बड़ा महिला संगठन राष्ट्र सेविका समिति कर्तव्य के आदर्श के रूप में लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर का स्मरण करता है बचपन के संस्कार ही बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं यही संस्कार जीवन की सफलता का निर्माण प्रशस्त करते हैं किसे पता था कि चौड़ी ग्राम जमखेडा अहमदनगर में जन्मी एक छोटी सी सौम्या शांत तेजवान बालिका मालवा के सूबेदार मल्हार राव को अपनी भक्ति व गायन से इस

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

तरह प्रभावित कर देगी कि वह अपने पुत्र खंडेराव होलकर के विवाह के लिए मां मानकोजी शिंदे के समक्ष प्रस्ताव रखने से भी नहीं हिचकिचाएंगे।

बालिका अहिल्याबाई में आदर्श भारतीय नारी के सभी गुण विद्यमान थे उनके विवेक नम्रता त्याग सेवा और सहनशीलता का ही है परिणाम था कि खंडेराव में आत्म गौरव वीरता का भाव उत्पन्न हुआ कुछ समय बाद अहिल्याबाई ने भी राजकाज में रुचि लेना प्रारंभ किया और युद्ध क्षेत्र में गोला बारूद बंदूक तोप और रसद की व्यवस्था की जिम्मेदारी संभाली और भविष्य के भारत की एक महान शासिका के रूप में अपनी पहचान बनाई।

जीवन परिचय

अहिल्याबाई का जन्म 31 दिसंबर 1725 को वर्तमान महाराष्ट्र राज्य के ग्राम चौड़ी जो सीना नदी के तट पर जामखेड़ अहमदनगर में हुआ था उनके पिता का नाम मानकोजी शिंदे था जो गांव के एक सामान्य किसान थे अपने पिता की इकलौती संतान थी विवाह इंदौर राज्य के संस्थापक महाराज मल्हराव होलकर के पुत्र खंडेराव से हुआ था इनका एक पुत्र मालेराव और एक पुत्री मुक्ताबाई थी भरतपुर के युद्ध में जो 1754 को हुआ था खंडेराव को जाटों ने धोखे से मार दिया तब खंडेराव की मृत्यु के बाद मल्हार राव ने पुनः शासन की बागडोर को संभाला लेकिन कुछ समय पश्चात मल्हार राव की मृत्यु हो गई तब रानी अहिल्याबाई ने राज्याभिषेक की बागडोर सवाली उनका राज्याभिषेक 11 दिसंबर 1767 को हुआ था और उनका देहांत 13 अगस्त 1795 को हो गया।

लोकमाता देवी अहिल्याबाई ने अपने जीवन में सामाजिक धार्मिक शासन और प्रशासन के क्षेत्र में अनेक कल्याणकारी कार्य किए जिन्हें निम्न बिंदुओं के रूप में देखा जा सकता है

1- प्रशासन और शासन की नीतियां

देवी अहिल्याबाई ने अपनी प्रशासनिक नीतियों से समृद्धि और शांति स्थापित की उन्होंने अपने राज्य में न्यायपूर्ण शासन की स्थापना की और प्रशासन में पारदर्शिता बनाए रखा उन्होंने केवल राज्य की सीमा के भीतर ही नहीं बल्कि आसपास के क्षेत्र में भी अपने राज्य का प्रभाव बढ़ाया उनकी नीतियों में किसानों व्यापारियों और सामान्य जन के हितों को प्राथमिकता दी जाती थी।

2- धार्मिक सुधार और मंदिर निर्माण-

उन्होंने विभिन्न धर्म के प्रति समान सम्मान और सहिष्णुता की नीति का अनुसरण किया उनका मानना था कि धर्म को समाज में सामूहिकता और सहिष्णुता के साथ देखा जाना चाहिए हिंदू धर्म के प्रति उनकी आस्था अत्यधिक दृढ़ थी और उन्होंने अनेक नए मंदिरों का निर्माण करवाया और पुराने मंदिरों का पुनरुद्धार् करवाया जैसे अखंडेश्वर मंदिर, पार्वती मंदिर, सोनकच्छ मंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर आदि। अहिल्याबाई ने धार्मिक स्थान को शुद्ध रूप प्रदान किया उन्होंने न केवल मंदिरों का निर्माण करवाया बल्कि धार्मिक अनुष्ठान और पूजा पद्धतियों को लेकर शुद्धता और सादगी को प्रोत्साहित किया उन्होंने काशी अयोध्या उज्जैन द्वारका और दक्षिण भारत के अन्य स्थान बेहतर बनाने के लिए अपने प्रयास किया।

3- सामाजिक सुधार और महिलाओं के अधिकार-

अहिल्या बाई ने महिलाओं के अधिकारों और सशक्तिकरण के लिए कई कदम उठाए उन्होंने महिलाओं को समाज में बराबरी का दर्जा देने की बात कही और उन्हें शिक्षित बनाने पर विशेष जोर दिया उनके द्वारा समाज में व्याप्त ऊंच नीच और भेदभाव के खिलाफ भी आवाज उठाई गई।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

4- राज्य का सुद्रण प्रशासन।

अहिल्याबाई होल्कर ने अपनी न्याय प्रियता और कुशल नेतृत्व से राज्य को सुद्रण किया और अपने राज्य में दक्ष प्रशासनिक संरचना स्थापित की जिससे राज्य में सुरक्षा और शांति बनी रही उनका प्रशासन न्याय और धर्म के प्रति प्रतिबद्धता के कारण काफी लोकप्रिय था।

5-व्यापार और अर्थव्यवस्था में सुधार

उन्होंने व्यापार को अधिक सुद्रण बनाया इसके लिए उन्होंने माल वाहन मार्गों और व्यापारिक संपर्कों को मजबूत बनाया उन्होंने अन्य राज्यों के साथ व्यापारिक संपर्क स्थापित किया उनके समय इंदौर व उनके आसपास के क्षेत्र की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत थी लोग सुखी व संपन्न थे।

6-सैन्य और सुरक्षा व्यवस्था

सेना में घुड़सवार और पैदल रथ सैनिक थे उनकी सेना पूरी तरह प्रशिक्षित और संगठित थी और प्रत्येक सैनिक का कार्य क्षेत्र तय था तथा युद्ध में नवीनतम तकनीकी और प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाता था सैन्य कर्मियों की नियुक्ति की एक व्यवस्थित व्यवस्था थी सैनिक कठोर अनुशासन में रहते थे उन्होंने विदेशी आक्रमणों से रक्षा हेतु अनेक किलो का भी निर्माण करवाया था जिन में लोहागढ़ का किला ,इंदौर का किला, राजवाड़ा, मालवा का किला, हिरणमाली का किला बहुत प्रसिद्ध है।

वीरांगना के रूप में देवी अहिल्याबाई

पुत्र की मृत्यु के पश्चात अहिल्याबाई बिल्कुल एकाकीनी हो गई राज्य था वैभव था किंतु उपभोग करने वाला उनके अतिरिक्त अब कोई और नहीं रह गया था कोई धनी मनी स्त्री जब एकाकीनी हो जाती है तो उसे अबला समझ कर दुष्ट विचार के लोग उसके धन को हड़पने के लिए षड्यंत्र करने लगते हैं यदि स्त्री सचमुच अवला होती है तो वह षड्यंत्र में फंस जाती है धन तो चला ही जाता है स्वयं वह भी संकटों में आकर ग्रस्त हो जाती है अहिल्याबाई ने राज और धन को भी हड़पने के लिए दुष्ट विचारों के दो मनुष्य षड्यंत्र करने लगे उनमें एक तो था पुणे का राघोवा और दूसरा था मांगराम चंद्रचूड़ राघोवा एक मराठा सरदार था और चंद्रचूड़ एक पूर्व राज्य अधिकारी दोनों के मन में लोभ पैदा हो गया दोनों ने विचार किया कि अहिल्याबाई एक कमजोर स्त्री है इस समय उसका अपना कोई नहीं है अतः उसके राज्य और वैभव को बड़ी सरलता के साथ अपनी मुट्ठी में किया जा सकता है।

चंद्रचूण ने राघव को पत्र लिखकर प्रेरणा प्रदान की उसने अपने पत्र में लिखा था अहिल्याबाई का अपना कोई नहीं है वह अकेली है और स्त्री है उसके राज्य पर चढ़ाई करके बड़ी सरलता के साथ उस पर अधिकार किया जा सकता है परिणाम स्वरूप राघोबा और चंद्रचूड़ दोनों अहिल्याबाई के राज्य पर चढ़ाई करने के लिए तैयार हो गए जब यह समाचार अहिल्याबाई के कानों में पड़ा तो ना तो अधीर हुई ना भयभीत हुई उन्होंने बड़े साहस के साथ शत्रुओं का सामना करने का निश्चय किया उनके निश्चय का प्रजा ने स्वागत किया प्रजा की ओर से घोषणा की गई हम होलकर राज्य की प्रजा अहिल्याबाई को छोड़कर और किसी को भी राजा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे हम अंत तक अहिल्याबाई का साथ देंगे प्रजा की घोषणा से अहिल्याबाई की रगों में बिजली दौड़ी वे बड़े उत्साह के साथ सैनिकों का संगठन करने लगी उन्होंने पुरुषों की सेना तो संगठित की स्त्रियों की भी एक सेना संगठित की इतना ही नहीं उन्होंने स्त्रियों की सेना को प्रशिक्षण भी दिया उधर राघोवा और चंद्रचूड़ दोनों चढ़ाई करने के उद्देश्य से उज्जैन जा पहुंचे जब यह समाचार इंदौर पहुंचा तो अहिल्याबाई के सहायक तोकोजी सेना लेकर शिप्रा नदी के किनारे जा पहुंचे नगर की ओर सेना के साथ

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

राघोबा डाटा था और दूसरे किनारे पर तुकोजी सेना के साथ थे तोकोजी ने राघव के पास संदेश भेजकर उसे सूचित किया कि यदि वह शिप्रा पार करने का प्रयास करेगा तो उसे मृत्यु का सामना करना पड़ेगा राघव और चंद्रचूड़ ने सोचा था कि स्त्री होने के कारण अहिल्याबाई युद्ध नहीं कर सकेगी वह सहज में ही उसके हाथों का खिलौना बन जाएगी किंतु जब उसने तोकोजी की सेना देखी और उसकी ललकार सुनी तो वह आश्चर्य में पड़ गया उसने जो कल्पना की थी पर मिट्टी के समान बिखर गई इस समय अहिल्याबाई का एक पत्र भी राघव को मिला उसने उस पत्र में अहिल्याबाई ने लिखा था आप मुझे अबला समझ कर मेरे राज्य और वैभव को हड़पना चाहते हैं मैं आपके स्वप्न को कभी पूरा नहीं होने दूंगी शिप्रा पार करने पर आपको तोकोजी की सेना का सामना करना पड़ेगा मेरी संगठित स्त्री सेना का सामना करना पड़ेगा आपको लोहे के चने चबाने पड़ेंगे पग पग पर मृत्यु खड़ी दिखाई देगी अहिल्याबाई के पत्र को पढ़ कर राघोबा का उत्साह ठंडा पड़ गया उसने अहिल्याबाई के पत्र के उत्तर में लिखा वह युद्ध करने के लिए नहीं आ रहा है वह तो आ रहा है संवेदना प्रकट करने के लिए सहानुभूति प्रकट करने के लिए अहिल्याबाई ने राघवा को पुनः लिखा यदि आप संवेदना प्रकट करने के लिए आ रहे हैं तो इतनी बड़ी सेवा की क्या आवश्यकता है आप पालकी पर बैठकर दो चार सिपाहियों के साथ इंदौर आए तो मैं आपका स्वागत करूंगी राघव करता तो क्या करता वह अपनी मर्यादा रखने के लिए दो चार सिपाहियों के साथ पालकी पर बैठकर शिप्रा के उस पार गया तोकोजी ने उसका स्वागत किया वह तोखोजी के साथ इंदौर गया और दो-तीन सप्ताह तक अतिथि के रूप में अहिल्याबाई की राजभवन में ठहरा अहिल्याबाई ने उसे अतिथि समझकर उसका स्वागत और सत्कार भी खूब किया।

इस प्रकार अहिल्याबाई के साहस और उनकी वीरता ने शत्रुओं के स्वप्न को ध्वस्त कर दिया था यद्यपि युद्ध नहीं हुआ राघव तथा चंद्रचूड़ का षड्यंत्र सफल नहीं हुआ पर यह बात बड़े जोरों से सामने आई कि इन दोनों ने अहिल्याबाई के राज्य को हड़पने का षड्यंत्र किया था किंतु अहिल्याबाई ने अपनी धीरता और वीरता से उसे मिट्टी में मिला दिया एक मराठी लेखक ने इस संबंध में लिखा है कि अहिल्याबाई भक्त और विवेक वान तो थी ही वीर हृदय भी थी उन्होंने राघोबा के आक्रमण के समाचार को पाकर स्त्रियों की जो सेना तैयार की थी उससे उनकी वीर हृदय का परिचय प्राप्त होता है उन्होंने बड़ी बुद्धिमानी के साथ अपने स्त्री सैनिकों को तलवारों और बंदूक चलाना तो सिखाया ही था तो तोपों गोलों को दागना भी सिखा दिया था इस प्रकार कह सकते हैं कि देवी अहिल्याबाई एक वीरांगना के रूप में भी जानी जाती हैं।

निष्कर्ष

अहिल्याबाई होलकर एक आदर्श रानी थी उनके समान दान करने वाली स्त्री भारत के इतिहास में दूसरी कोई खोजने पर भी नहीं मिलेगी उन्होंने अपने जीवन में इतना दान और इतना परोपकार किया इसका लेखा-जोखा तैयार करना बड़ा कठिन है उनके पास जो कोई जाता था वह खाली हाथ नहीं लौटता था दान और परोपकार के रूप में ही अहिल्याबाई ने हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक के तीर्थ में घाट, मंदिर, धर्मशालाएं ,सराय बनवाई ऐसा कोई तीर्थ नहीं है जिसमें उनके द्वारा बनाया गया मंदिर और धर्मशाला ना हो उन्होंने न केवल मंदिर बनवाए बल्कि उनमें पूजा पाठ के लिए एक व्यवस्था भी की आज जब अहिल्याबाई नहीं है तब भी उन मंदिरों में नियम पूर्वक पूजा पाठ होता रहता है इस प्रकार कह सकते हैं की अहिल्याबाई एक आदर्श शा शिका एक आदर्श न्याया वेत्ता एक आदर्श प्रजा पालक और आदर्श कला तथा साहित्य प्रेमी थी उनके इन्हीं गुणों ने उन्हें महान बना दिया इतना महान की कोई भी

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 1, August 2026 Impact Factor: 8.2

विचारशील लेखक उन्हें देवी कहने से अपने आप को रोक नहीं सकता वे सचमुच देवी थी उन्होंने भारत की गोद में जन्म लेकर उसके गौरव को और भी अधिक चमका दिया और भी अधिक गौरवान्वित कर दिया।

संदर्भ सूची

1 ए सी बनर्जी पेशवा माधव राव प्र 17

2 रवि नंदकर्णी मराठा साम्राज्य का उदय और अंत

3 सर देसाई मैराथन का नवीन इतिहास भाग 2 प्रश्न 549

4 दो सत्य प्रकाश भारत का इतिहास प्रश्न 277

5 राष्ट्रभाषा प्रकाशन दिल्ली 1992 जोशी पृष्ठ 61,626 प्रतियोगिता दर्पण दिसंबर 2022 पृष्ठ 73 ,74